ISBN: 978-93-5212-526-5

PROCEEDINGS OF THE SECOND INTERNATIONAL SEMINAR OF SWAMI VIVEKANANDA ASSOCIATION OF SCIENCE AND HUMANITIES

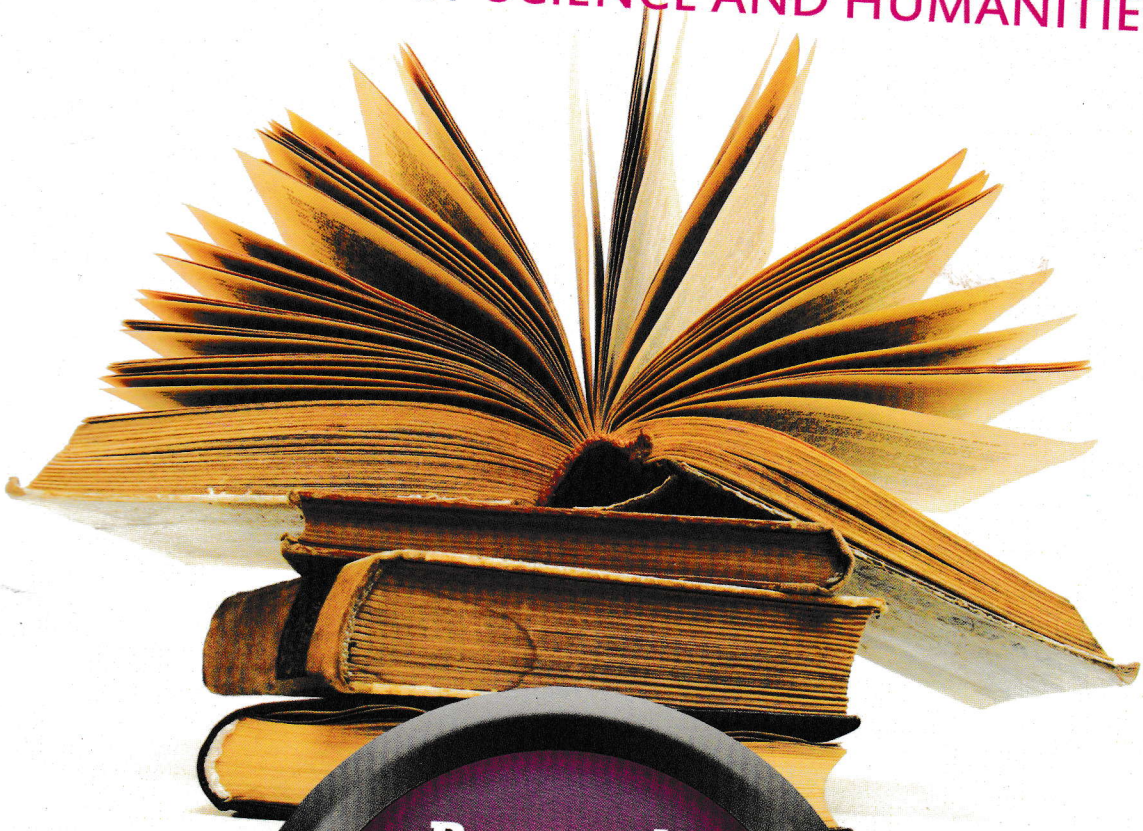

Research Papers and Articles of the Second International Seminar of SVASH

SVASH 2015

GOVT REG.NO:TVM/TC/493/2013

VOLUME-IV- LANGUAGES

Editors: Dr. O.Sandhya Vijayan & Dr.B. Indulekha

CONTENTS PAGE NO'S

7. स्त्री आस्मिता और प्रभा खेतान
Farsana.....Hindi 135

8. पद्मश्री लीलाधर जगूडी के साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त काव्यसंग्रह 'अनुभव के आकाश में चाँद' – एक अध्ययन
Dr.Gayathry.N.....Hindi 137

9. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में मर्यादा पुरुषोत्तम राम
Jayalekshmi Sharma.....Hindi 143

10. यातनाओं की बारिश तब्दील हो जाती है कविता में
Dr. Indu.K.V.....Hindi 145

11. रामविलास शर्मा और जायसी का प्रेम मार्ग
Dr. Lekshmy S.S.....Hindi 148

12. सांस्कृतिक सामंजस्य की कथा : ''रावी लिखता है''
Litty Yohannan.....Hindi 151

13. भारतीय लोक क्रांति में हिन्दी की भूमिका
Dr.Mugul Munnda Singh.....Hindi 153

14. कामायनी की कविताओं में स्त्री
Dr.Manju M.Nair.....Hindi 155

15. सुशीला टाकभौरे की कविता में अभिव्यक्त नारी मुक्तिबोध
Dr.P.V. Omana.....Hindi 159

16. स्वतन्त्रोत्तर हिन्दी नटको में भूमंन्ड्लीकरण और परिवार
Poornima.A.P.....Hindi 162

17. भारतीय कहानियों पर राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव
Dr.Radhamani.c.....Hindi 164

18. देश विभाजन की विभीषिका और राही मासूम रज़ा का ''आधा गाँव''
Ramya.R.....Hindi 168

19. 1990 के बाद के, केरल के हिन्दी साहित्य की गतिविधियाँः एक अवलोकन
Dr.Reeja.S.R.....Hindi 170

20. बहुलतावाद के विशेष संदर्भ में हिन्दी उपन्यास
Dr.Seema Chandran.....Hindi 174

21. हिन्दी आंचलिक उपन्यासकार शिवप्रसाद सिंह जी का अलग-अलग वैतरणी (के दलित)और मलयालम के उपन्यास लेखक तकषि शिवशंकर पिल्लै जी के रण्टिटङ्ङषी (दो सेर) एक तुलनात्मक अध्ययन
Dr. Sandhya Vijayan.....Hindi 177

22. हिन्दी कहानी में नारी"
Dr. Sreeletha P.....Hindi 181

सुशीला टाकभौरे की कविता में अभिव्यक्त नारी मुक्तिबोध

Dr.P.V. Omana, Associate Professor inHindi, SSUS, Thiruvananthapuram

समानकालीन हिन्दी दलित कवियों में विद्रोही चेतना से युक्त सर्वमान्य है डॉ. सुशीला टाक भौरे। हिन्दी के कवियों ने दलित कविता का सृजन मराठी के दलित वियों से प्रेरणा पाकर किया। सुशीला टाक भौर ने अपनी रचना कर्म की प्रेरणा श्रोत भारत के संविधान शिल्पी डॉ. भीम राँव रामजी अम्बेडकर, महात्मा ज्योतिबा फूले एवं सावित्री बाई फूले की विचारधारा स्वीकारती है। सुशीला टाक भौरे जैसी प्रतिष्ठित लेखिका का परिचय यहाँ अनिवार्य है। प्रो. डॉ. सुशीला टाकभौरे का जन्म ४ मार्च १९५४ में मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के बानापुरा में हुआ। हिन्दी साहित्य में एम.ए की उपाधी, अम्बेडकर विचारधारा में एम. ए. बी.ए.ड, और हिन्दी साहित्य में पी. एच्. डी की उपाधी प्राप्त की। आपकी प्रकाशित कृतियाँ, 'हिन्दी साहित्य के इतिहास में नारी', 'समाज और साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ में'(विवरण), परिवर्तन ज़रूरी है, टूटता वह्म अनुभूति के खेरे, संघर्ष, (कहानी संग्रह), 'स्नाती बूँद और खारे मोती', 'हमारे हिस्से का सूरज' 'यह तुम भी जानो' , 'तुमने उसे कब पहचाना'(कविता संग्रह) 'नंगा सत्य' , 'रंग और व्यंग्य' (नाटक संग्रह) 'शिकंज़े का दर्द' (आत्मकथा) और 'नीला आकाश' (उपन्यास) । विविध विधाओं की इन सभी रचनाओं का शीर्षक ही उनकी सामाजिक सजगता, विद्रोही भावना परिवर्नकामी मानसिकता एवं मुक्तिबोध का परिचायक है । इनकी रचनाओं का कथ्य ज़रूर पाठकों को प्रेरणादयक एवं उन्हें जागरूक बनाने में सक्षम है।

'यह तुम भी जानो' , 'तुमने उसे कब पहचाना' काव्य संग्रह में कुल मिलाकर ४७ कविताएँ संकलित है। दो खंडों में विभक्त प्रस्तुत संग्रह के दो शीर्षक है 'यह तुम भी जानो,' 'तुमने उसे कब पहचाना'। प्रथम खंड में २२ कविताएँ है। प्रत्येक कविता लेखिका के परिवर्तित एवं जागरूक विचारों का प्रमाण है। संग्रह की भूमिका में कवयित्री का मंतव्य विशेष महत्वपूर्ण एवं विचारणीय है- इस संग्रह में परोक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप से युवा जीढी को संदेश रूप में कहे गये बोधगम्य चेतना के स्वर है। ये टीस, पीडा, बेचैनी और तिलमिलाहट से पूर्ण व्यंग्य बाण है। इनका उद्देश्य है- जड मानसिकता को सचेत करना। सुशीलाजी कहती है कि उनके सामने वह बिखरा समाज है, जहाँ शिक्षा का प्रसार उन्नत रूप में नहीं दिखाई देता, जहाँ पूँजी नहीं है या पूँजी रहने पर भी जो पूँजी का सही नियोजन नहीं जानते, जहाँ रोजगार के पर्याय दिखाई नहीं देते। इक्कीसवीं सदी के इस अंतिम दौर में भी भारतीय दलित समाज की वास्तविक स्थिति का उदघाटन है उपर्युक्त कथन। दलितों की दयनीय अवस्था का चित्रण करती हुई कवयित्री करती है कि रूढी परंपरा का अंधानुकरण से, मानसिक दुर्बलता के कारण, आत्मविश्वास खोकर दलित समाज अपनी यथार्थ स्थिति को पहचानने में असमर्थ बन गया है। उन्हें पथ प्रदर्शन करना वे अपना प्रथम कर्तव्वय मानती है। साथ ही साथ अपनी जाति समुदाय के शिक्षित एवं आरक्षण की सुविधा से सुखी जीवन बिताने वालों पर उनका विश्वास नहीं है। वे समाज से अलग अपनी दुनिया बनाकर जीवन बिताते है। उनके हृदय को ज़रा आदोलित करना लेखिका का उद्देश्य है।

पुरुषप्रधान समाज में नारी मुक्ति, नारि अस्मिता तथा उनके अधिकारों को लेकर किये दावे नारे सब निरर्थक एवं व्यर्थ है। वर्तमान समय अस्मिता संकट का समय है। नारी को स्वयं अपनी स्थिति को पहचानकर अपने अस्थित्व को सुरक्षित रखने केलिए कार्यरत होना चाहिए। समाज में नारी की स्थिति एकदम दयनीय है। दलित नारी की स्थिति अति दयनीय है। वे दाहरे शोषण का शिकार है। दलित स्त्री के अस्मिता संकट से सम्बन्धित अनेक सवालों से ग्रस्त है सुशीला टाक भौरे का मन। बहूत सारे सवालों से भरा है प्रस्तुत काव्य संग्रह। स्वयं शीर्षक ही सवाल है- 'तुमने उसे कब पहचान'-

साथी का दम भरने वाले / स्वामी
तुमने उसे कब पहचाना?/ क्यों कहते हो नारी को
मानव- समाज का गहना।

कवयित्री का सवाल है स्त्री को मानव समाज का आभूषण क्यों कहते है। वे कहती है कोयला खदानों में हीरा ढूढनेवाले लोग यह नहीं जानते है कि घर का हीरा कोयला जैसा जलाया जाता है। उपेक्षा आक्रोश से नारी व्यक्तित्व को रौंधा जाता है। यह एक नंगा सत्य है।

लेकिन आज नारी आत्मनिर्भर एवं जागरूक बन चुकी है। नारी को आत्मनिर्भर एवं सुरक्षित रखने में लेखिका की विचारधारा प्रेरणादायक है-

बेटियों की शादी आखिरी विदाई है
क्यों सबकी आँख भर आई है?
जब जन्म की ज़मीन ही नदारद है
हवा पानी क्या रोये क्या गाये?

नारी जागृति का परिचायक है निम्नांकित पंक्तियाँ

विश्वास भक्ति प्रेम की सीता/ बार बार धरती में दफनाई जाती है।
इसलिए संसार में / पीडा की फसलें उग आती है।

लेकिन आज की जानकी धरती में नहीं आकाश में जाना चाहती है। वह अपनी शक्ति के प्रति सजग है।

'आस्था' शीर्षक कविता में सुशीलाजी कहती है जीवन में घटित छोटी छोटी घटनाएँ ही आस्था को जन्म देती है। कवयित्री की राय में चरित्रवान निष्ठावान समाज में बल होता है। संघर्ष में जूझने का और सफलता प्राप्त करने का।

सीता और सावित्री की बात/ मैं नहीं कहती,
पर कह सकती हूँ/चरित्रवान, निष्ठावान समाज में
बल होता है/ संघर्ष में जूझने का,
सफलता तक/ टिके रहने का
छोटी छोटी घटनाएँ ही/ आस्था को जन्म देती है। (पृ.२९)

औरत की प्रतिक्रिय की ताकत का परिचायक है स्त्री शीर्षक कविता। स्त्री अपने मन की चट्टान पर जब भी चोट पडती है, तब आग सी फैल जाती है। उसके मन की आग अंत में ज्वालामुखी होकर फूट पडती है। इसी विस्फोट को सहज स्वाभाविक मानती हैं।

लेग / भूकंम्प की बात को
सहज मानते है,/स्त्री
ज्वालामुखी हो सकती है,/ यह भी तो
सहज बात है। (पृ.३२)

'यह कौन सा समाज है' कविता विकलांग सामाजिक व्यवस्था के प्रति कवयित्री का आक्रोश है। वे पूछती है-

क्या वह दुष्टहीन है/ जो पराई नज़र में देखकर
दुःख- सुख का अनुभव तो करता है
मगर स्वयं/कुछ भी कर नहीं पाता । (पृ४६)

कविता के अंत में अपनी अस्मिता को पहचान कर लडने का आह्वान भी है। स्वयं को पहचानने का आह्वान करती हुई टाकभौरेजी अपनी जनता को जागृत करती है-

कर्मठ हाथों को उठाने दो
.....
तुम भी/ तीन डग में नाप लो
संपूर्ण विश्व/ विधाता एक मुट्ठी चावल
तुम्हीं से माँगेगा।

इसका कारण वे बताती है-

क्योंकि/ तुममें निष्ठा है समाज के प्रति
शक्ति है संघर्ष की/ युक्ति है
संगठित होकर आगे बढने की/ तुम सर्वशक्तिमान हो।

प्रस्तुत कविता में अम्बेडकरवादी दर्शन का परभाव है। नारी की अनभिज्ञता की सूचना देती हुई कवयित्री कहती है (पृष्ठ ४९)

घर परिवार के छोटे घेरे में/हर नारी स्वयं घिरती है,
रोजी रोटी तक जाकर/ जीवन को धन्य समझती है(प्रशंसनीय नारी पृ.६९)

शोषित नारी की प्रगतिशील विचार एवं परिवर्तन कवयित्री के लिए खुशी की बात है। वे स्त्रियों को आगे बढने की, अपने अधिकार प्राप्त करने की, प्रेरणा देती है।

आवो बहनो आगे बढकर/पायें हम अपने अधिकार
देखो कोई रोक न पाये/बढते कदमों की रफ्तार।

कवयित्री को विश्वास है जागरूक नारी ज़रूर बदलेगी, समता सम्मान पायेगी और उनमें यही विस्वास आयेगा कि वह किसी से छोटी नहीं। हर नारी प्रशंसनीय है।

लक्ष्मी दुर्गावती सरीखी/प्रशंसनीय हर नारी है
शक्ति सामर्थ्यवान वह/ नहीं किसी से हारी है (पृ.७०)

अबला समझनेवाली लडकी को शक्ति एवं अस्मिता का बोध दिलाती हुई कवयित्री कहती है-

लडकी तुम किसी पर निर्भर नही/स्वयं पूर्ण हो
तुम मुझसे अलग नही/ फिर भी तुम्हारा अपना
एक अलग अस्तित्व है।/तुम्हारी राह तुम्हारी मंजिल
मुझसे बहूत आगे है। (मासूम भोली लडकी)

औरत नहीं मज़बूर कविता में स्त्री की मज़बूरियों को भस्म करने का उपाय बताती है-

तनिक इनको हवा दे दो/ईंधन स्वयं बन जाएगी
बनकर ये शोला करेंगी/भस्म जब मज़बूरियाँ । (पृ.७८)

स्त्री की ताकत को पहचाननेवाली कवयित्री वर्तमान विज्ञापन दुनिया स्त्री को कैसे उपभोग की चीज़ बनाती है इसकी ओर संकेत करती है-

कभी कला के नाम पर/कभी सस्ते विज्ञापन में
मुझे न भुनाइए/मैं माँ हूँ , बहन हूँ, बेटी हूँ
पत्नी और प्रेयसी भी/ मुझे दाव पर न लगाइए। (मेरी स्थिति पृ७९)

प्रस्तुत काव्य संग्रह की प्रात्येक कविता दलित समाज की दयनीय स्थिति, स्त्री की अस्मिता संकट एवं रूढी- परंपरा के प्रति अपना विरोध प्रकट करनेवाली है। अपनी जाति और अपनी बहिन की प्रगति की आशा है। कविता का विषय एकदम यथार्थ है। सामाजिक सजगता, एवं कुरीति अनीति और अनरीति के प्रति विरोध एवं आक्रोश प्रमुख प्रतिपाद्य है। कविता की भाषा ज़रूर सीधा- सादा एवं आसानी से मसझ में आनेवाली है। आलंकारिकता, दुरूहता आदि से मुक्त भाषा ज़रूर पाठकों को आकर्षित करेगी। असलीयतों की अभिव्यक्ति के लिए शिष्ट एवं क्लिष्ट भाषा की ज़रूरत भी नहीं। कवयित्रि का उद्देश्य शोषित पीडित दलित और नारी वर्ग की प्रगति एवं परिवर्तन है। समाज में उनका अपना महत्व है उन्हें सम्मान प्राप्त करना है।